सिद्ध की शालाओं के कुछ प्रसंग

❑ जयपाल

सिद्ध ने अपनी पाठशालाओं में बच्चों को एक स्वतंत्र व खुला माहौल दिया । लेकिन स्वतंत्रता और खुलेपन की कोई सीमा होनी चाहिए अन्यथा बच्चों में अहं भाव पैदा होता है । बच्चे अधीर बन जाते हैं जिससे वे दैनिक जीवन में अनुशासन नहीं रख पाते, सिद्ध ने ऐसा अनुभव किया। अनुभवों को जोड़ते हुए सिद्ध में अपनी पाठशालाओं में बच्चों के अन्दर एकाग्रता बढ़ाने व आत्मविश्वास को बनाये रखने तथा कृतज्ञता का भाव विकसित करने के लिये ध्यान-पद्धति के अन्तर्गत 'आनापान' करवाते हैं ।

आनापान प्रत्येक दिन सुबह प्रार्थना के बाद 10 से 15 मिनट तथा शाम को छुट्टी से पहले 10-15 मिनट करवाते हैं । इसके लिए शिक्षक को एक दस दिवसीय ध्यान का शिविर करना पडता है । आनापान 7-8 वर्ष से नीचे के बच्चों से सामान्यत: नहीं करवाते। शिक्षक-आनापान के दौरान आचार्य का काम करता है। सभी बच्चों को दूर-दूर बैठाकर, ताकि एक दूसरे से छू न सके, नीचे दरी पर बैठते हैं । शिक्षक भी साथ में बैठते हैं । सभी बच्चे व शिक्षक आंख बन्द करते हैं । पीठ और गरदन को सीधा रखते हुए, मुंह बन्द करके नाक के द्वारा आती-जाती सांस को देखते हैं तथा महसूस करते हैं । इसी आती जाती सांस पर अपना ध्यान बार बार लगाये रखते हैं । इससे मन की चचंलता के प्रति बच्चों की सर्तकता बढ़ती है । ध्यान समापन के बाद शिक्षक बच्चों को कभी कभी ध्यान- पद्धति के बारे में बताते हैं । जैसे हम ये ध्यान क्यों करते है ? इससे क्या फायदा होगा ? मन को एकाग्र करने के लिए मन के मालिक होने के अहसास का ये एक अभ्यास है ।

सिद्ध ने शुरू में जब ये आनापन प्रारंभ किया तो बच्चों को बहुत कठिनाई हुई , लेकिन अब बच्चे आसानी से बैठ सकते हैं और 10 से 15 मिनट तक शांत बैठे रहते हैं । ध्यान समाप्ति के बाद अब उनको बहुत अच्छा लगता है । बच्चों से चर्चा करने पर वे इससे हुए बहुत सारे पढ़ाई संबंधी व व्यक्तिगत फायदे भी बताते हैं। लेकिन जिन स्कूलों में प्रत्येक दिन इसे प्रयोग में नहीं लाते, उन्हें ज्यादा फायदा भी नहीं होता।

पहाड़ों में एक ग्राम पंचायत में आमतौर पर एक से अधिक गांव आते हैं । किसी ग्राम पंचायत में सात से आठ गांव भी आते हैं। एक गांव से दूसरे गांव की दूरी लगभग डेढ-दो कि.मी. होती है । इसलिए एक ग्राम पंचायत में प्राइमरी पाठशालाएं भी एक से अधिक होती हैं । क्योंकि छोटे बच्चे सभी गांवों से एक जगह नहीं आ पाते। पहाड के गांवों में प्राइमरी पाठशालाओं में औसतन 35 से 40 बच्चे होते हैं । पाठशालाओं में कम से कम एक व अधिक से अधिक दो शिक्षक कक्षा पांच तक की कक्षाओं को पढ़ाते हैं। अधिकतर समय तो एक ही शिक्षक को पांच तक की कक्षाएं देखनी पड़ती हैं जो कि पहाड़ के लिए एक बड़ी समस्या है । बच्चों की उपस्थिति भी कम रहती है क्योंकि बच्चे अपने घर में घरेलू कार्यों को करते हैं ।

सिद्ध ने इस समस्या के समाधान हेतु अपने स्कूलों में फ्लेक्सी टाईम[x] का प्रयोग किया । बच्चों की कक्षाओं को दो शिफ्टों में किया । पहली शिफ्ट कक्षा शिशु से कक्षा दो तक के लिए सुबह के समय प्रारम्भ होकर व दोपहर तक लगभग 3 घण्टे चलती है तथा दूसरी शिफ्ट कक्षा दो से पांच तक, दोपहर से तीन साढे तीन बजे तक चलती है। पहली शिफ्ट कक्षा शिशु से कक्षा दो तक की जब पढ़ाई होती है तो दूसरी शिफ्ट कक्षा 3 से 5 तक वाले बच्चे स्कूल में आकर एक जगह बैठकर अपना काम करते रहते हैं । अगर स्कूल में अधिक शिक्षक हैं तो एक शिक्षक उनके साथ रहता है । बच्चे इस दौरान अपना गृहकार्य, पुनरभ्यास, पुस्तकालय का उपयोग (पत्रिकाएं पढ़ना आदि) परियोजना कार्य, सांस्कृतिक गतिविधि, नाटक, खेल आदि की तैयारी करते हैं। प्रथम शिफ्ट के ढाई से तीन घण्टे के बाद और आधे घण्टे के मध्यान्तर के बाद दूसरी शिफ्ट कक्षा 3 से 5 तक चलती है । यदि कोई बच्चे किसी घरेलू काम में घर में रुक गये हों तो तब तक वे बच्चे भी आ जाते हैं । दूसरी शिफ्ट की पढ़ाई शुरू होती है और पहली शिफ्ट के बच्चे एक जगह बैठकर, प्रथम शिफ्ट में दूसरी शिफ्ट वाले बच्चों जैसे ही कार्य करते हैं । अगर कोई छोटे बच्चे हैं और खाना नहीं लाये, घर जाने की जिद करते हैं, तो उन्हें संभव हो तो जाने भी दिया जाता है ।

पहाड़ के परिपेक्ष्य को देखते हुए सिद्ध आज प्राइमरी पाठशालाओं के लिए इस प्रयोग को उपयोगी मानता है और सिद्ध की प्राइमरी पाठशाओं में यह प्रयोग चल रहा है ।

इस प्रयोग से शिक्षकों को पढ़ाने में भी सुविधा होती है ।

कम शिक्षक स्कूल को आसानी से चला सकते हैं । अधिक से अधिक रचनात्मक गतिविधियां की जा सकती हैं । बच्चों को सीखने के लिए अच्छा स्वतंत्र माहौल मिल जाता है । बच्चे पढ़ाई के साथ घर के काम में भी हाथ बंटा पाते हैं ।

सिद्ध के स्कूलों में बच्चों व शिक्षकों द्वारा छोटी-छोटी बच्चों की समितियां बनायी जाती हैं । जैसे खेल समिति, सफाई समिति, व्यवस्था समिति, अनुशासन समिति आदि । कहीं-कहीं पर इन समितियों को समूहों के रूप में जाना जाता है जैसे - कोयल समूह, आजाद समूह, कमल समूह, तिलक समूह आदि। सप्ताह में इन समितियों, समूहों की बैठक होती है जिसे बालसभा कहा जाता है।

बाल सभा में किसी एक विद्यार्थी को अध्यक्ष व एक को संचालन कर्ता बनाया जाता है । इस बालसभा में प्रत्येक समिति की तरफ से अपनी अपनी समिति के कार्यों का विवरण रखा जाता है। क्या-क्या समस्याएं आ रही हैं ? एक दूसरे की शिकायतें होती हैं तथा जिम्मेवारियों को ठीक से करने के लिए सुझाव दिए जाते हैं । शिक्षक उस समय बच्चों के समान ही रहता है । प्रत्येक समिति, समूहों या विद्यार्थियों या शिक्षक को अपनी बात रखने की पूरी छूट रहती है। प्रत्येक समिति व समूह मिलकर कुछ न कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत-नाटक आदि दिखाते हैं । ऐसा भी किया जाता है कि एक बाल सभा में एक समूह दिखायेगा तो दूसरी बाल सभा में दूसरा समूह सांस्कृतिक गतिविधि प्रस्तुत करेगा अपना कार्यक्रम रखेगा। इस प्रकार बारी-बारी से कार्यक्रम होते रहते हैं । इसकी तैयारी हर समूह अपने आप करता है । बाल-सभा सुबह प्रार्थना के बाद एक घण्टे की होती है । इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों की झिझक दूर करना, बच्चों में आत्म विश्वास बढ़ाना, बच्चों में नेतृत्व के गुण विकसित करना, बच्चों को जिम्मेदारी का अहसास कराना तथा बच्चों में हीनभावना को दूर करना आदि हैं।

सिद्ध ने यह प्रयोग बच्चों के साथ 1993-94 से प्रारंभ किया है । इस प्रयोग में बहुत सफलता मिली है । इस प्रयोग से बच्चों की पढ़ाई में भी प्रगति हुई है। इसका एक नतीजा यह है कि अब बच्चों में स्कूल के प्रति अपनत्व की भावना अर्थात 'हमारा स्कूल' की भावना देखने को मिलती है। ◆

[x] (शाला समय में लचीलेपन)